ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

संकाय – मानविकी

विषय – हिंदी

शोध –प्रारूप

शोध का विषय :-

लक्ष्मी नारायण सिंह के काव्य में मनोवैज्ञानिक चेतना

शोध निर्देशक

नंद किशोर पंडित

13-04-2024

सहायक प्राचार्य
हिंदी विभाग
ए०पी०एस०एम०कॉलेज, बरौनी

डॉ० नंद किशोर पंडित

सहायक प्राचार्य

हिंदी विभाग

ए. पी. एस. एम. कॉलेज

बरौनी, बेगूसराय (बिहार)

शोधार्थी

दीपा रानी

दीपा रानी

पैट क्र० – E2209009

(सत्र 2021-22)

पता - नया टोला बाघी, वार्ड सं० - 11

सुहृदयनगर, बेगूसराय (बिहार)

Scanned with OKEN Scanner

शोध–प्रारुप

1. प्रस्तावित भूमिका/प्रस्तावना

कविता का मानव जीवन में बड़ा महत्त्व है। कविता मनुष्य को जीवन जीने की सही शिक्षा देती है। अच्छे संस्कार देती है। इसके अतिरिक्त कविता मानव–मात्र को ऊँचे आदर्श, पवित्र धारणा और अटल आस्था को धारण करने की ऊर्जा और शक्ति देती है। कविता के माध्यम से जीवन का सत्य और सब प्रकार के अनुभवों को व्यक्त किया जा सकता है। आज से सैकड़ों वर्ष पहले राजर्षि भर्तृहरि जी ने कविता के विषय में यहाँ तक कह दिया था कि यदि किसी के पास अच्छी कविता है, तो उसे विशाल राज्य की क्या जरूरत है। कवि सम्मेलन में शिक्षाविदों, समाजसेवियों तथा सहृदय काव्यप्रेमियों ने कविता के लक्ष्य पर खुलकर बातचीत की और बताया कि कविता जीवन के लिए बेहद उपयोगी है।

यदि हम कविता का सही मूल्यांकन करें तो आधुनिक परिवेश में भी कविता मानव जीवन के लिए संजीवनी का काम करती है। कविता से मनोरंजन के अतिरिक्त अच्छी शिक्षा और श्रेष्ठ आदर्श भी मिलते हैं।

आचार्य बलदेवराज शांत (हरियाणा साहित्य अकादमी से सम्मानित साहित्यकार) के अनुसार, ''आदर्शमयी कविता का सृजन कम होता चला जा रहा है। कुछ सहृदय काव्यप्रेमी काव्यरस का पान करने के लिए उत्सुक रहते है''।

किसी भी देश का विकास वहाँ के लोगों के विकास से जुड़ा होता है और इसमें शोध की अहम भूमिका होती है। शोध और अध्ययन–अध्यापन के बीच न केवल गहरा नाता है,

Scanned with OKEN Scanner

बल्कि शोध ज्ञान–सृजन और ज्ञान को परिष्कृत करने के काम भी आता है।

साहित्यकार समाज के प्रहरी होते हैं। वे अपने तात्विक एवं नीर–क्षीर विवेक दृष्टि से समाज की क्रिया–कलापों का अवलोकन करते हुए उसकी विद्रूपताओं एवं असंगतियों को प्रकाश में लाकर समाज को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने की कोशिश करते हैं। साहित्य एवं साहित्यकार का आद्यांत लक्ष्य लोक मंगल एवं जनकल्याण ही होता है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वे सदा प्रयत्नशील रहते हैं।

कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ–सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से उपर उठाकर लोक–सामान्य के भाव–भूमि पर ले जाती है। कवि–वाणी के प्रसार से हम संसार के सुख–दुख, आनन्द–क्लेश आदि का शुद्ध स्वार्थमुक्त रूप में अनुभव करते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार, ''कविता ही हृदय को प्रकृतदशा में लाती है और जगत के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्चभूमि पर ले जाती है।'' कविता का अंतिम लक्ष्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण कर उसके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य–स्थापन है।

कविता की इसी रमाने वाली शक्ति को देखकर जगन्नाथ पंडितराज ने रमणीयता का पल्ला पकड़ा और उसे काव्य का साध्य स्थिर किया तथा योरोपीय समीक्षकों ने ''आनन्द'' को काव्य का परमलक्ष्य ठहराया। कविता केवल वस्तुओं के ही रंग–रूप में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यन्त मार्मिक दृश्य सामने रखती है।

Scanned with OKEN Scanner

मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य–असभ्य सभी जातियों में, किसी न किसी रूप में पाई जाती है। चाहे इतिहास न हों, विज्ञान न हों, दर्शन न हों, पर कविता का प्रसार अवश्य रहेगा।

साहित्य की विविध विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कविता रही है। प्रगतिशील लेखन के प्रखर कवि श्री लक्ष्मी नारायण सिंह की रचनाऐं सामाजिक–राष्ट्रीय सरोकार से सर्वथा प्रतिबद्ध रही है। समय की गति एवं बदलते परिवेश के साथ साहित्यकार भी विस्मृति के कगार पर पहुँच जाते हैं। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों के सर्जनात्मक राष्ट्रीय अवदान का वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन शोध एवं समीक्षा का अहम् पक्ष है। उनके अनुसार राष्ट्रीयता, जाति और पंथ का उपयोग लोगों को विभाजित करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

आचार्य शुक्ल ने 'लोक–मंगल की साधना' को काव्य की श्रेष्ठता के प्रतिमान के रूप में प्रतिष्ठित किया है। वर्तमान समाज कई रूढ़ियों से ग्रस्त है। इन सभी असहज चीजों को जड़ से समाप्त किए बिना किसी भी स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती।

कविता की मुख्य विशेषता होती है, रसानुभूति की प्रबलता। कविता में लय, छंद, अलंकार, रस, शब्द योजना, काव्य भाषा और काव्यगुण के माध्यम से मानव–कवि अपने विचारों और मनोभावों को व्यक्त करता है।

2. प्रस्तावित विषय पर शोध की आवश्यकता –

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रगतिशील लेखन के प्रखर कवि श्री लक्ष्मीनारायण सिंह की रचनाएँ सामाजिक– राष्ट्रीय

Scanned with OKEN Scanner

सरोकार से सर्वथा प्रतिबद्ध रही हैं। समय की गति एवं बदलते परिवेश के साथ साहित्यकार भी विस्मृति के कगार पर पहुँच जाते हैं। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों के सर्जनात्मक राष्ट्रीय अवदान का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन शोध एवं समीक्षा का अहम् पक्ष है।

लक्ष्मीनारायण सिंह की रचनाएँ कई दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन का राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास जीवंत है। सांप्रदायिकता की जघन्य समस्या से भारत सदियों से आक्रांत रहा है। उन्होंने अपनी रचनाओं में साम्प्रदायिक सौहार्द्र एवं एकत्व की स्थापना की है।

विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों की अभिव्यक्तियाँ भले ही अलग हों, उनके धर्मग्रंथ पृथक् हों किन्तु आस्था, विश्वास एवं भक्ति में कोई तात्त्विक भेद नहीं है। वास्तविक मजहबी वही है जो अपने सम्प्रदाय तथा वर्ग के बाहर के लोगों का हितैषी है। लक्ष्मीनारायण सिंह की रचनाएँ साहित्य तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक एवं समाजिक विषयों पर उनका महत्त्वपूर्ण लेखन है। उनकी रचनाएँ गाँधीवादी चेतना से ओत–प्रोत हैं। राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी उनकी रचनाएँ अप्रतिम हैं।

3. <u>प्रस्तावित शोध विषय का महत्त –</u>

अशिक्षा के कारण समाज में व्याप्त रूढ़िवादी प्रवृत्ति से समाज किस कदर आक्रांत है, इस ज्वलंत समस्या की ओर उनकी रचनाएँ पूरी प्रखरता के साथ इंगित करती हैं। स्वाधीनता पश्चात् भारत में हुए सामाजिक परिवर्तन का आदर्शवादी स्वरूप भी उनकी कृतियों में परिलक्षित है। दलितोत्थान से

Scanned with OKEN Scanner

सम्बद्ध उनकी रचनाएँ परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियों को रूपायित करने में समर्थवान हैं।

लक्ष्मीनारायण सिंह के प्रसिद्ध खंडकाव्य हैं – 'शंबूक की शहादत', 'त्यागमयी कैकेयी' तथा 'अपहरण'। 'क्रूरकर्मा ताड़का और स्वाभिमानी बालि' उनके लघु कथा काव्य हैं। 'मत बाँटो इंसान को', 'चले स्वभाषा, चले स्वदेशी', 'विडम्बना', 'कृषक–गाथा', 'घोटाला–राग', 'आतंक के सायें में' तथा 'सरस्वती वेदना' आदि उनके कविता–संग्रह हैं। उनकी अनेक रचनाएँ अब भी अप्रकाशित हैं।

'शम्बूक की शहादत' खण्डकाव्य वर्तमान समाज के भेद–भावपूर्ण स्पृश्यास्पृश्य–परम्परा की निस्सारता को बुद्धिवाद तथा तर्कप्रज्ञा से सिद्ध करता है। लेखक ने इस काव्य–कृति में तपस्वी शम्बूक के गरिमामय चरित्र के समुज्ज्वल शिखर का आकर्षक वर्णन किया है और अपनी काव्य–रचना शक्ति से तत्कालीन परिस्थिति को समकालीन परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में प्रासांगिक बनाकर उपन्यस्त किया है।

'त्यागमयी कैकेयी' में जनमानस में आज भी कैकयी के संदर्भ में फैली भ्रामक धारणा के प्रतिरोध में युग के प्रति सजग एवं सतर्क, जागरूक एवं प्रतिबद्ध, विचारवान् एवं प्रखर कवि श्री लक्ष्मी नारायण सिंह ने रामकथा की पुनर्व्याख्या प्रस्तुत की है। 'त्यागमयी कैकेयी' अपने प्रगतिशील चिंतन, आधुनिक साहित्य के ज्वलंत आयाम–स्त्री–विमर्श तथा नारी सशक्तीकरण की दृष्टि से अनूठा बन पड़ा है। निश्चय ही यह कृति उनकी कवित्व शक्ति का सशक्त प्रमाण एवं परिणाम दोनों है।

'मत बाँटो इन्सान को' संग्रह की कविताएँ

Scanned with OKEN Scanner

साम्प्रदायिकता, पाखण्ड, जातीय उन्माद, धार्मिक जड़ता, विकलांग आस्था एवं गलित रूढ़ि से सम्बद्ध हैं। ये कविताएँ निस्संदेह संप्रदायवाद, अलगाववाद, कठमुल्लापन एवं मृत धार्मिकता के विरुद्ध शंखनाद है।

'चले स्वभाषा चले स्वदेशी' राष्ट्रीय सम्मान–भाव की प्रेरणा देती है। इसमें कवि ने देश और अपनी भाषा की प्रतिबद्धता जाहिर की है। आजादी के महासंग्राम का नेतृत्व करनेवाले नेताओं ने एक स्वर से हिन्दी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा का पद दिया था मगर राजनीतिक दुरभिसंधि ने उनकी पवित्र मंशा पर पानी फेर दिया। ऐसा दुश्चक्र रचा कि हिन्दी न तो सही मायने में राष्ट्रभाषा बन सकी, न राजभाषा ही।

'विडम्बना' में कवि ने मृत धार्मिकता, अंधविश्वास, अवैज्ञानिक सोच, सामाजिक कुरीति, सामाजिक, आर्थिक तथा लैंगिक विषमता के विरुद्ध समता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व की स्थापना की है।

'आजादी का दीवाना मेरा गाँव' में कवि ने राष्ट्रीय चिंताओं में डूबकर समस्याओं के भँवर में घिरे वर्तमान राष्ट्र की समस्याओं का निदान ढूँढ़ने की भी ईमानदार कोशिश की है।

'क्रूरकर्मा ताड़का और स्वाभिमानी बालि' में रचनाकार ने पौराणिक विषय को अपने तर्कों के साथ प्रस्तुत किया है। क्रूरकर्मा के वध से धर्म नष्ट नहीं होता और न स्वाभिमान ही – विचार के इन दोनों ध्रुवों को मिलानेवाली यह रचना कहीं–कहीं राष्ट्रकवि दिनकर की काव्यशैली का स्मरण भी कराती है।

4. <u>प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किये गये शोधकार्य :–</u>

Scanned with OKEN Scanner

कविवर लक्ष्मीनारायण सिंह पर विधिवत् शोधकार्य अबतक सम्पन्न नहीं हुए हैं। इनकी रचनाओं पर विभिन्न पत्रिकाओं में छिट–पुट लेख प्रकाशित हैं। यथा–गणेशदत्त महाविद्यालय बेगूसराय द्वारा प्रकाशित 'स्वर्णभूमि–2017' के जनवरी अंक में डॉ0 राजेन्द्र साह (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) द्वारा प्रस्तुत लेख "श्री लक्ष्मी नारायण सिंह विरचित त्यागमयी कैकेयी : एक विश्लेषण"

जबकि इनका समग्र साहित्य परिमाण की दृष्टि से अत्यंत विपुल है, दूसरे अभिव्यंजनाशक्ति की दृष्टि से भी इनकी विशिष्ट एवं पृथक पहचान है।

प्रासांगिक तथा ज्वलंत समस्याओं एवं विषयों को लेकर उनके द्वारा लिखे गए रचना संसार की ओर अब तक शोधकर्त्ताओं का ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ है। जहाँ तक मैंने अध्ययन किया है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोध का प्रस्तुत प्रारूप सर्वथा पृथक् तथा नये संदर्भ में गवेष्णा के लिए उत्प्रेरित करता है। अतः इस दिशा में प्रस्तावित शोधकार्य पूरी सार्थकता के साथ प्रयत्नशील होगा।

5. <u>प्रस्तावित शोध के स्रोत (आधार ग्रंथ) :–</u>

<u>प्रकाशित रचनाएँ :–</u>

1. चले स्वभाषा, चले स्वदेशी (कविता–संग्रह), 1991, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।
2. मत बाँटो इन्सान को (कविता–संग्रह), 1991, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।
3. शम्बूक की शहादत (खण्डकाव्य), 1991, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।
4. विडम्बना (कविता संग्रह), 2011, सुचित्रा ऑफसेट एवं

Scanned with OKEN Scanner

प्रिंटिंग बेगूसराय।

5. त्यागमयी कैकेयी (खण्डकाव्य), 2012, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।

6. आतंक के साये में (कविता संग्रह) 2012 मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।

7. कृषक गाथा (कविता संग्रह), 2014, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।

8. सरस्वती की वेदना (कविता संग्रह), 2014, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।

9. घोटाला–राग (कविता संग्रह), 2014, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।

अप्रकाशित रचनाएँ :–

1. हरा रहे जग भरा रहे (पर्यावरण संबंधी आलेख, कविताएँ और दोहे)।

6. प्रस्तावित शोध की पूर्व कल्पना/संभावित शोध निष्कर्ष–

लक्ष्मीनारायण सिंह की सर्जनात्मक चेतना मूलतः मानवतावादी तथा मानवीय मूल्य की स्थापना है। उन्होंने अपनी रचनाओं में धार्मिक सहिष्णुता की पुरजोर वकालत की है तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता, सामाजिक सौहार्द को पूरी तार्किकता के साथ उपस्थित किया है। आज हमारा समाज एवं राष्ट्र जिस दौर से गुजर रहा है, उनमें इनकी कृतियों की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। आज बौद्धिक जागरूकता के बावजूद धर्म निरपेक्षता का सिद्धांत एवं व्यवहार शिथिल है। किसी भी राष्ट्र की स्थिरता एवं सुख–समृद्धि हेतु सामाजिक सौहार्दपूर्ण वातावरण का होना निहायत जरूरी है।

Scanned with OKEN Scanner

उनकी रचनाएँ आज के संदर्भ में अपनी सार्थकता सिद्ध करनेवाली है। पाश्चात्य अंधानुकरण हमारी सांस्कृतिक चेतना को कुंद करता है, प्रदर्शनोन्मुखी बनाता है। दलितोत्थान आज भी भारतवर्ष के लिए एक बड़ी चुनौती है। उनकी रचनाएँ जीवन मूल्यों को स्थापित कर कलात्मक ढंग से उसकी अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

7. <u>प्रस्तावित शोध की प्रविधि :-</u>

शोध की प्रविधि विश्लेषणात्मक एवं मूल्यांकनपरक होगी। इसके अतिरिक्त शोध की आगमनात्मक- निगमनात्मक प्रविधियों के साथ आलोचनात्मक एवं विवरणात्मक प्रविधियों द्वारा लक्ष्मीनारायण सिंह की कृतियों का विवेचन किया जायेगा। दलितों की स्थिति, स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, साम्प्रदायिक सौहार्द, राष्ट्रीयता तथा गाँधीवाद के परिप्रेक्ष्य में लक्ष्मीनारायण जी की कृतियों का मूल्यांकन उपर्युक्त प्रविधियों द्वारा सम्पन्न किया जाना प्रस्तावित शोध का लक्ष्य है।

8. <u>प्रस्तावित शोध अध्यायों का विभाजन -</u>

शोध-कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त करने का प्रस्ताव है -

1. प्रथम अध्याय - लक्ष्मीनारायण सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. द्वितीय अध्याय - लक्ष्मीनारायण सिंह के काव्य में दलित एवं स्त्री चेतना।
3. तृतीय अध्याय - लक्ष्मीनारायण सिंह के काव्य में साम्प्रदायिक सौहार्द्र
4. चतुर्थ अध्याय - लक्ष्मीनारायण सिंह के काव्य में राष्ट्रीयता
5. पंचम अध्याय - लक्ष्मीनारायण सिंह के काव्य में गाँधीवाद

Scanned with OKEN Scanner

6. षष्ठ अध्याय – लक्ष्मीनारायण सिंह के काव्य में शिल्प–संरचना

7. सप्तम अध्याय – उपसंहार

9. (क) प्रस्तावित संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य और गाँधीवादी चेतना : सं0 डॉ0 सुशीला गुप्ता, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा प्रकाशन, मुम्बई–2, 2000 ई0
2. आधुनिक साहित्य : नंद दुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं0 2031 वि0
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ0 बच्चन सिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
4. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1 : प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, 1985
5. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–2 : प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1986
6. हिन्दी साहित्य (तृतीय खंड) : प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा, भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग 1969
7. हिन्दी साहित्य – एक परिचय : डॉ0 त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1982
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं0 डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1978
9. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी – नंद दुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सं0 1999 वि0
10. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002

Scanned with OKEN Scanner

11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, द्वितीय खंड : डॉ0 गणपतिचंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989
12. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2009
13. हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास : डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली, 1982
14. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष : शिवदान सिंह चौहान, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 दिल्ली, 1961
15. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ0 शिव कुमार वर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली–6, 1980
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, 15–ए महात्मा गाँधी, इलाहाबाद–1, 1984
17. विश्वधर्म – दर्शन : श्री सॉवलिया बिहारी लाल वर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना–4, 1975
18. डॉ0 भीमराव अम्बेदकर – अम्बेदकर समग्र, भारत सरकार का प्रकाशन।
19. ज्योतिबा फुले – ज्योतिबा फुले समग्र
20. अभय कुमार दुबे (सं0) आधुनिकतह के आईने में दलित
21. सिमोन द बोउवा – स्त्री उपेक्षित (अनु0 प्रभा खेतान)
22. महोदवी वर्मा – शृंखला की कड़िया
23. डॉ0 शरण कुमार लिम्बाले – दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
24. ओम प्रकाश वाल्मीकि– दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
25. कॅवल भारती – दलित विमर्श की भूमिका
26. साधना आर्य (सं0) – नारीवादी राजनीति : संघर्ष और मुद्दे

Scanned with OKEN Scanner

27. सदानंद शाही (सं0) – दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद

28. प्रभा खेतान – उपनिवेश में स्त्री

(ख) पत्रिकाएँ :–

1. 'सरिता' सितम्बर (प्रथम एवं द्वितीय) 1981 में प्रकाशित 'तुलसी के राम'

2. निधनोप्रांत प्रकाशित स्मृतिग्रंथ 'स्मारिका', जनवरी 2023, राजा कम्प्यूटर कचहरी, बेगूसराय।

3. परिषद पत्रिका (शोध–त्रैमासिक) वर्ष–31, अंक : 1–4, अप्रैल 1991–मार्च, 1992 (संयुक्तांक) प्रकाशन : दिसम्बर 1993 ई0

नंद किशोर पंडित
13-04-2024

शोध निर्देशक का हस्ताक्षर

सहायक प्राचार्य
हिंदी विभाग
ए0पी0एस0एम0कॉलेज, बरौनी

दीपा रानी

शोधार्थी का हस्ताक्षर

Scanned with OKEN Scanner